शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' काव्य
कवि- श्री रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न :- 'पथिक' किस प्रकार का काव्य है?

उत्तर :- 'पथिक' एक खण्ड काव्य है। खण्डकाव्य के प्रत्येक सर्ग के प्रारम्भ में प्रकृति का वर्णन किया गया है। यह पुराना नियम है। त्रिपाठी जी ने उस पुरातन नियम की रक्षा की है। इसमें प्रभात और चाँदनी रात का आकर्षक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त वन, पर्वत, नदी और समुद्र तट इत्यादि का भी वर्णन हुआ है। प्रो० कृष्ण शंकर शुक्ल का कहना है कि 'प्रकृति चित्रण' में त्रिपाठी जी ने अपनी ओर से कुछ भी नहीं मिलाया है। जो दृश्य जैसा है, मात्र वैसा ही अंकित कर देना इनकी विशेषता है।

प्रश्न :- कवि ने किस 'वाद' के कवियों का अनुसरण किया है?

उत्तर :- 'छायावादी' कवियों की तरह कवि त्रिपाठी जी ने भी यह स्वीकार किया है कि सारी प्रकृति इसी महाप्राण सत्ता से प्रभावित और परिचालित है। यथा-

उससे ही विमुग्ध हो नभ में चन्द्र विहँस देता है,
वृक्ष विविध पत्तों पुष्पों से तन को सज लेता है।

'पथिक' में एक स्थान पर जहाँ कवि ने धरती के अनमोल विमल प्रभात सामुद्रिक समीकरण के मधुर स्पर्श का मोहक और मादक चित्रण किया है, वहाँ उसने पथिक पत्नी के विषाद युक्त मुखमण्डल का भी मार्मिक चित्रण किया है।

प्रश्न :- कवि ने प्रकृति को किस दृष्टि से देखा है?

उत्तर :- कवि श्री राम नरेश त्रिपाठी ने प्रकृति को बड़े ही स्वच्छन्द और व्यापक दृष्टि से देखा है। कवि को प्रकृति का उग्र रूप स्वीकार नहीं है। इनके काव्य 'पथिक' में कल्पना से अधिक अनुभूति की गहराई है। जहाँ प्राचीन कवियों ने प्रकृति को जड़ रूप में लिया है वहाँ त्रिपाठी जी उसको चेतन स्वरूप में ग्रहण किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी रा०ध०मा०पु०
रा०कृ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ

उपन्यासकी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत-भाग-2 - पद्य खण्ड
शीर्षक-'छप्पय', कवि नाभादास Date _____ Page _____

प्रश्न:- 'छप्पय' शीर्षक पदों का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:- भक्तकवि नाभादास का यह छप्पय छन्द उनकी प्रसिद्ध रचना भक्तमाल से संकलित की गई है। ~~छप्पय~~ छप्पय शीर्षक पद कबीरदास एवं सूरदास पर लिखे गये हैं। छप्पय एक छन्द है, जो छः पँक्तियों का गेय पद होता है। यह छप्पय छन्द नाभादास की सारग्राही चिंतन के उदाहरण हैं।

प्रस्तुत छप्पय में वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न दो शाखाओं के इन महान भक्त कवियों पर लिखे गये छन्द हैं। इसमें इन कवियों से संबंधित अब तक के सम्पूर्ण अध्ययन-विवेचन के सार-सूत्र स्पष्ट अंकित हैं। इन पंक्तियों में कवि की दूर-दृष्टि दिखायी पड़ती है।

पाठ के प्रथम छप्पय में नाभादास ने आलोचनात्मक शैली में कबीर के प्रति अपने भाव व्यक्त किये हैं।

कवि के अनुसार कबीर ने भक्ति विमुख तथाकथित धर्मों की धज्जी उड़ा दी है। उन्होंने वास्तविक धर्म को स्पष्ट करते हुए योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का बार-बार प्रतिपादन किया है। उन्होंने अपनी सबदी, साखियों और रमैनी में क्या हिन्दू और क्या तुर्क सबके प्रति आदर का भाव व्यक्त किया है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है। उनमें लोक मंगल की भावना है। संत कबीर मुँह देखी बात नहीं करते हैं। उन्होंने वर्णाश्रम के पोषक षट्-दर्शनों की दुर्बलताओं को तार-तार करके दिखा दिया है।

दूसरे छप्पय में कवि नाभादास ने सूरदासजी का कृष्ण के प्रति भक्तिभाव प्रकट किया है। कवि का कहना है कि सूर की कविता सुनकर कौन ऐसा कवि है जो उनके सामने नहीं झरेगा। सूरदास की कविता में श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन है। उनके जन्म से लेकर स्वर्गधाम तक की लीलाओं का मुक्त गुणगान किया है। सूरदास की कविता में गुण-माधुरी और रूप-माधुरी सब कुछ भरी हुई है। सूरदास की दृष्टि दिव्य थी। वही दिव्यता उनकी कविताओं में भी प्रतिबिंबित है। गोप-गोपियों के संवाद में अद्भुत

शेष अगे-

प्रीति का निर्वाह दिखायी पड़ता है। शिल्प की दृष्टि से उक्ति-वैचित्र्य और अनुप्रासों की अनुपम छटा सर्वत्र दिखाई पड़ती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी [illegible]
रा०उ० सं० महावि० सुरकसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'निर्मला' उपन्यास

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न:- यथार्थवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- यथार्थवाद का अर्थ है यथातथ्य चित्रण अर्थात् जैसा है वैसा ही चित्रण। असम्भव कल्पनाओं से हटकर जीवन और जगत का स्वाभाविक चित्रण ही यथार्थवाद कहलाता है। यथार्थवाद वस्तु सत्य, युग सत्य और जीवन सत्य को चित्रित करता है और यह चित्रण सत्यानुभूति से प्रेरित होता है। जीवन के यथार्थ को अनुभूति की प्रेरणा से सामने रख देना ही वास्तविक यथार्थवाद है। यथार्थवाद यथातथ्य क्रूर नग्न चित्रण से एक ओर जीवन की विभीषिका का चित्रण करता है तो दूसरी ओर भाव और विचार उत्पन्न करके पाठक के हृदय और मस्तिष्क में आन्दोलन उत्पन्न करता है।

प्रश्न:- आदर्शवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- आदर्शवाद का अर्थ है नैतिक मानदण्डों के अनुरूप चित्रण अर्थात् जैसा होना चाहिए वैसा चित्रण करना। किसी समस्या या घटना का यथातथ्य चित्रण ही पर्याप्त नहीं होता, वरन् लेखक का दायित्व यह भी है कि वह नैतिक मानदण्डों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाली होनी चाहिए। पात्रों के चरित्र में नैतिक मानदण्डों एवं मूल्यों की आधारभूमि होनी चाहिए। अधिकतर लोग आदर्शवाद को कल्पना की ऊँची उड़ान मानते हैं, जिसमें लेखक वर्तमान की विभीषिका से त्रस्त होकर एक स्वप्न लोक का निर्माण करता है। किन्तु यह वास्तविक आदर्शवाद नहीं है। नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना एवं प्रतिष्ठा ही आदर्शवाद का मूल उद्देश्य है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 27/05/21
रा० उ० स० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ